Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce

Sub:- Planning & Economic development (Subsidiary)
Paper:- III

SNSRKS College, SAHARSA

B.Com Part - II

Sub:- Planning & Economic Development (Subsidiary)

Introduction

(नियोजन के प्रकार)

* Kinds of Planning *

वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए आवश्यक क्रियाकलापों के बारे में चिन्तन करना आयोजन या नियोजन (Planning) कहलाता है।

नियोजन कई प्रकार के हो सकते हैं। सामान्यतया नियोजन को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :-

अवधि के आधार पर :-

(i) अल्पकालीन नियोजन : यह सामान्यतया एक वर्ष और इससे कम की अवधि के लिये तैयार किया जाता है। इसके अंतर्गत अल्पकालीन क्रियाओं का निर्धारण इस प्रकार किया जाता है, ताकि दीर्घकालीन नियोजन के उद्देश्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सके। इसमें क्रियाओं का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है।

(2) मध्यकालीन नियोजन : यह योजना 1 वर्ष से अधिक लेकिन 5 वर्ष से कम की अवधि की होती है तथा इनमें उन तमाम क्रियाओं को निर्धारित किया जाता है जिनसे आधार

Scanned with CamScanner

(5) व्यापकता का सिद्धान्त :- यह सिद्धान्त नियोजन की सर्व व्यापकता को प्रदर्शित करता है। यह नियोजन को प्रबन्ध के प्रत्येक स्तर पर अपनाये जाने पर जोर देता है।

(6) मोर्चाबन्दी का सिद्धान्त :- नियोजन प्रतिस्पर्धी की दृष्टि से अत्यन्त सुदृढ होना चाहिए। यह सिद्धान्त प्रतियोगी संस्थाओं की नीतियों एवं कार्य प्रणाली को ध्यान में रखकर नियोजन करने पर बल देता है।

(7) सीमित घटक का सिद्धान्त :- यह सिद्धान्त इस बात पर जोर देता है कि नियोजन करते समय एवं विभिन्न विकल्पों का मूल्यांकन करते समय उन सीमित घटकों को पहचान लेना चाहिए जो लक्ष्य-प्राप्ति के लिये महत्वपूर्ण हो तथा जो नियोजन में आगे बाधक बन सकते हो।

(8) प्राथमिकता का सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त के अनुसार नियोजन प्रबन्ध का एक प्राथमिक कार्य है, अतः अन्य प्रबन्धकीय कार्यों को करने के पूर्व नियोजन किया जाना आवश्यक होता है।

(9) तथ्यों का सिद्धान्त :- नियोजन तभी प्रभावी होता है जबकि वह समस्त उपलब्ध प्रासंगिक तथ्यों पर आधारित हो तथ्यों का सामना करता हो तथा तथ्यों द्वारा इंगित कार्यवाही को प्रारंभ कराता हो।

(10) नीति संरचना का सिद्धान्त :- यह सिद्धान्त बतलाता है कि नियोजन को सुसंगत एवं प्रभावी बनाने के लिए सुदृढ़

Scanned with CamScanner

(6)

PAGE :
DATE : / /

नीतियों, कार्यक्रमों एवं व्यूहरचनाओं का निर्माण किया जाना चाहिए।

* नियोजन की कठिनाइयाँ सीमाएँ एवं आलोचनाएँ :-

नियोजन का महत्व होते हुए भी कुछ विद्वान इसे 'समय एवं धन की बर्बादी अथवा बरसाती ओले' कहकर इसका विरोध करते हैं। इनका कहना है कि व्यवसायिक योजनाएँ अनिश्चित एवं अस्थिर परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में तैयार की जाती है जब इनका आधार ही निश्चत - है तो फिर यह कैसे माना जा सकता है कि नियोजन द्वारा निर्धारित बातें सदैव शत-प्रतिशत सत्य होगी। इस विरोध का मूल कारण नियोजन में उत्पन्न विभिन्न कठिनाइयों एवं सीमाओं का होना है जिसके कारण इसकी कटु शब्दों में आलोचनाएँ की जाती है। इसका संक्षिप्त विवरण निम्न है :-

(1) सर्वोत्तम विकल्प के चुनाव में कठिनाई
(2) लोचशीलता का अभाव
(3) पर्याप्त मानसिक योग्यता का अभाव
(4) मनोवैज्ञानिक बाधाएँ
(5) अरुचिकर कार्य
(6) हिस्सेदारी का अभाव
(7) सीमित व्यावहारिक मूल्य

The end

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub:- Planning Economic And Development (PED) (Sub)
SNSRKS College, SAHARSA

Scanned with CamScanner

(4)

नियोजन के सिद्धान्त :- आज जिस प्रकार के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक माहौल में हम हैं उसमें नियोजन उपक्रम एक अभीष्ट जीवन-साथी बन चुका है।

इसके सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :-

(i) समय का सिद्धान्त :- योजना बनाते समय समय योजना के पूरी पूरी होने का समय अवश्य निश्चित कर देना चाहिए ताकि विभिन्न कार्यक्रमों के पालन में समय का ध्यान रखा जा सके।

(2) लोचशीलता का सिद्धान्त :- नियोजन लोचशील होना चाहिए क्योंकि यह भविष्य के पूर्वानुमानों पर आधारित होता है। नियोजन इतना लोचशील होना चाहिए कि अनिश्चित घटनाओं के कारण होने वाली हानियों को न्यूनतम किया जा सके। लोचशीलता का अर्थ है कि योजना में आसानी से परिवर्तन किया जा सके व नए मार्गों को अपनाया जा सके।

(3) कार्यकुशलता का सिद्धान्त :- नियोजन का यह सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि सामूहित उद्देश्यों की प्राप्ति न्यूनतम प्रयत्नों एवं लागत पर की जानी चाहिए। नियोजन की सफलता इसी बात पर निर्भर करती है कि कितनी तत्परता से लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

(4) परिवर्तन का सिद्धान्त :- नियोजन के इस सिद्धान्त के अनुसार प्रबन्धक को नाविक की भाँति सदैव अपने कार्यों की जाँच करते रहना चाहिए और इच्छित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु नियोजन में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(2) मध्यस्तरीय नियोजन :- इन योजनाओं का निर्माण मध्यस्तरीय प्रबन्धकों द्वारा किया जाता है जो कि निम्नस्तरीय नियोजन के लिये आधार का कार्य करती है।

(3) निम्नस्तरीय नियोजन :- निम्न स्तर पर कार्य करने वाले प्रबन्धकों द्वारा किया जाता है। या बनाई गई योजनाएँ मध्यस्तरीय योजनाओं को कार्य रूप देने का कार्य करती है।

महत्व के आधार पर :- महत्व के आधार पर नियोजन को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :-

(i) समष्टि नियोजन :- भारत के आर्थिक परिदृश्य में 1990 के पश्चात आये परिवर्तन, यथा - उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण तथा पारदर्शिता ने समष्टि नियोजन को महत्वपूर्ण बना दिया है। उपक्रम के सफल संचालन के लिये इसकी विद्यमानता आवश्यक समझी जाने लगी है। सामान्य अर्थों में समष्टि नियोजन एक व्यापक योजना है जो संस्था को पूर्णता में विचार करती है। इसे नियोजन का समग्र दृष्टिकोण कहा जा सकता है।

(2) व्यूहरचनात्मक नियोजन :- यह न तो चालों का पिटारा है और न ही तकनीकों का समूह, बल्कि यह एक विश्लेषणात्मक विचार एवं कार्य के लिये साधनों की प्रतिबद्धता है। यह उपक्रम की साहसिक क्षमताओं में सुधार लाने की विधि है।

(3) परिचालन नियोजन :- परिचालन नियोजन को रणनीतिक नियोजन के नाम से भी जाना जाता है। यह व्यूहरचनात्मक नियोजन को विषय-वस्तु एवं स्वरूप प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

मूल समस्या का समाधान करने में मदद मिल सके।

(3) दीर्घकालीन नियोजन :- ये योजनाएं 5 वर्ष या उससे अधिक की अवधि के लिये तैयार की जाती है। इनके द्वारा उपक्रम में दीर्घकालीन उद्देश्य निर्धारित किये जाते है तथा उन्हे प्राप्त करने के लिये विशिष्ट योजनाओं का निर्माण किया जाता है।

प्रकृति के आधार पर :- प्रकृति के आधार पर नियोजन को दो भागों में बाँटा जा सकता है :-

(i) स्थायी नियोजन :- यह नियोजन स्थायी प्रकृति का होता है जिसे बार-बार उपयोग में लाया जाता है। इनमें उपक्रम की नीतियाँ, संगठन का ढाँचा, प्रमाणित प्रक्रिया एवं विधियाँ सम्मिलित की जाती है।

(ii) अस्थायी नियोजन :- यह वह नियोजन है जो किसी विशेष स्थिति के लिये बनाया जाता है और उस उद्देश्य के पूरा हो जाने के साथ ही समाप्त होता है। इन्हे एकल प्रयोग नियोजन के नाम से भी जाना जाता है। इनकी प्रकृति अस्थायी एवं नवीनता की होती है। बजट इसका अच्छा उदाहरण है।

स्तर के आधार पर :- स्तर के आधार पर नियोजन को तीन भागों में बांटा जा सकता है :-

(i) उच्चस्तरीय नियोजन :- यह उच्चस्तर पर कार्य करने वाले प्रबन्धकों द्वारा बनाई गई योजनाएँ, जो कि संपूर्ण उपक्रम के क्रियाकलापों को प्रभावित करती है।

Scanned with CamScanner